सहायक प्राध्यापक — एस॰ एस॰ कॉलेज विक्रमगंज
सुकेश्वर सिंह
विषय — संस्कृत
कक्षा — B.A – part – I
paper — I
Anuvad — (Meghdutam)

(1) धूमज्योतिः सलिलमरुतां संनिपातः क्व मेघः
संदेशार्थाः क्व पटुकरणैः प्राणिभिः प्रापणीयाः ।
इत्यौत्सुक्यादपरिगणयन्गुह्यकस्तं ययाचे
कामार्ता हि प्रकृतिकृपणाश्चेतनाचेतनेषु ॥

अनुवाद — धुएँ, पानी, धूप और हवा का जमघट बादल कहाँ, कहाँ संदेश की वे बातें जिन्हें इन्द्रियों चोखी इन्द्रि[यों] वाले प्राणी ही पहुँचा पाते हैं?
उत्कण्ठावश इस पर ध्यान न देते हुए यक्ष ने मेघ से ही याचना की।
जो काम के सताए हुए हैं, वे जैसे चेतन के सम[ीप] वैसे ही अचेतन के समीप भी, स्वभाव से दीन हो जाते हैं।

(2) जातं वंशे भुवनविदिते पुष्करावर्तकानां
जानामि त्वां प्रकृतिपुरुषं कामरूपं मघोनः ।
तेनार्थित्वं त्वयि विधिवशाद्दूरबन्धुर्गतोऽहं
याच्ञा मोघा वरमधिगुणे नाधमे लब्धका[मा] ॥

अनुवाद — पुष्कर और आवर्तक नामवाले मेघों के लोक-प्रसिद्ध [वंश] में तुम जन्मे हो। तुम्हें मैं इन्द्र का कामरूपी मुख्य अधिकारी जानता हूँ। विधिवश, अपनी प्रिया से दूर पड़ा हुआ मैं इसी कारण तुम्हारे पास याचक बना हूँ।
गुणीजन से याचना करना अच्छा है चाहे वह निष्फल ही रहे। अधम से माँगना अच्छा नहीं चाहे सफल भी हो।